CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4.5 VHP

२१६७५

॥ श्रीगायत्रीतत्वनिर्णयः ॥

लेखक :-ज्योतिर्वित् श्री पं० शिवदत्तशास्त्री

व्या० आ० आ० कर्मकाण्ड विशारदः

॥ मूल्यमस्यप्रेम्णाध्ययनम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या 15 प्राप्ति-संख्या 2825

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम श्री गायत्री तत्त्व निरीक्षण

लेखक पं शिवदत्त शास्त्री

लेनेवाले का	देनेकी	लेनेवालेका	लौटानेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

॥ श्री गायत्रीतत्वनिर्णयः ॥

(हिन्दीभाषानुवादसहितः)

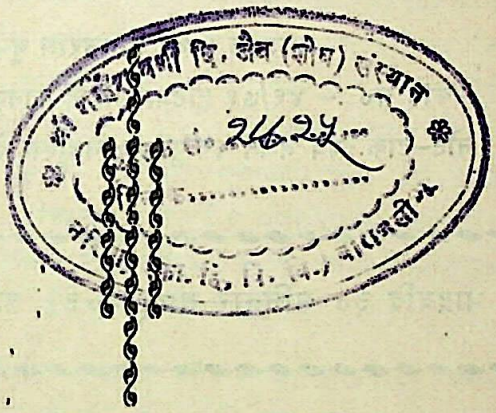

लेखक :-

इटावामण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामवास्तव्यसुधीशिरोमणि-
-विद्वत्सार्वभौमश्रीपं० श्यामलालशर्मसूनु :-
ज्योतिर्वित्श्रीपं० शिवदत्तशास्त्री व्या० आ० आ०
कर्मकाण्डविशारदः

सङ्केतः—पुस्तक का मूल्य निःशुल्क है। लोक-
कल्याणार्थ ही प्रकाशित की गई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखक :–ज्योतिर्वित्श्रीपं०शिवदत्तशास्त्री

व्या०आ०आ०कर्मकाण्डविशारद

स्थान–सलेमपुर पत्रालय–अछल्दा। मण्डल–इटावा (उ० प्र०)

प्रकाशक :–श्री अनन्तराम गुप्त

मकान नं० :– ४६/७१ हटिया लोहाई कानपुर (उ० प्र०)

नोट–डाक व्यय भेजने पर पुस्तक निःशुल्क भेज दी जायेगी।

भाद्रवदि ३० शनिवार संवत् २०३१ ता० १७-८-७४

पुस्तकप्राप्त स्थान–

(१) श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी

एम. ए., एल. टी. (डी. जी. पी.)

लेक्चरार

७३ मुहल्ला ठाकुरान

मु०पो०–लखना

जिला इटावा (उ० प्र०)

(२) श्री अनन्तराम गुप्त

४८/२७७ संरांय,

कानपुर (उ० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक—का—नम्रनिवेदन

"श्रीगायत्रीतत्वविवेचनम्" नामकीपुस्तक प्रकाशिकरवा करके शीघ्रातिशीघ्र वितरित करवादीगई है विशेष याचना होने पर पुनः श्रीगायत्रीतत्वनिर्णयः नामकीपुस्तक प्रकाशित करवाकर के आपलोगों के कर कमलों में सादरसमर्पित है। श्रीगायत्रीतत्वविवेचनम् नामकी पुस्तक के आधार से ही संशोधित तथापरिवार्द्धित करवा के श्रीगायत्रीतत्वनिर्णयः प्रकाशित की गई है संशोधिततथा परिवर्द्धित जो भी कुछ किया गया है वह परमपूज्य परमादरणीय श्रीमान् पं० शिवदत्तशास्त्री जी ने बड़ी कृपा करके किया है।

पुस्तक के प्रकाशन के समय श्रीमान् शास्त्री जी की अनेक कारणवश अनुपस्थिति रही थी अतः अशुद्धि एवं अन्यान्य दोषरहना स्वाभाविक है। सुजन-समुदाय क्षमाकरें तथासूचित करने की कृपा करें।

भवदीयानुचर :-

अनन्तरामगुप्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। गायत्रीमहत्ववर्णन ।।

संसार में सभी सम्प्रदाय के लोग वेदों को मानते हैं--वेद अपौरुषेय अर्थात् पुरुषकृत न होने के कारण। गायत्री महामन्त्र वेद मन्त्र है अतः इसको निर्विवाद मानने में कुछ भी सन्देह रह ही नहीं जाता है। पुराण-उपपुराण-उपनिषत् व धार्मिक ग्रन्थों में भी गायत्री का विशद विवेचन है।

गै शब्दे, इस धातु से 'शतृ' प्रत्यय करने पर तथा 'त्रैङ्' पालने" इस धातु से योग करने पर 'गायत्री' यह शब्द बनता है।

गयान् प्राणान् त्रायते सागायत्री (८ ऐत्तरेय ब्रा०)

अर्थ–जो गय अर्थात् प्राणों की रक्षा करे वह गायत्री है।

सा हृषा गयाँस्तत्रे। प्राणा वैगयास्तत्प्राणाँस्तत्रे तद्गयाँस्तत्रे तस्माद् गायत्रीनाम। (शतपथ ब्राह्मण १४।८।१५)

अर्थ–गायत्री ने गयों अर्थात् प्राणों की रक्षा की थी। प्राण गय कहे जाते हैं। गायत्री ने प्राणों की रक्षा की थी इसी कारण इसका नाम 'गायत्री पड़ा।

तद्यत्प्राणंत्रायते तस्माद्गायत्री (वृहदारण्यक ५।१४।४)

अर्थ–जिससे प्राणों की रक्षा होती है वह गायत्री है।

गायत्रीगायतेः स्तुतिकर्मणा (निरुक्त ७।१२।५)

जिस महामन्त्र सेद्विज, परमात्मा की स्तुति करता है वह गायत्री कहलाती है।

प्राणागयाइतिप्रोक्ता स्त्रायतेतानथापिवा। (भारद्वाज)

अर्थ–गय प्राणों को कहते हैं जो प्राणों की रक्षा करे वह गायत्री है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गायन्तंत्रायतेयस्माद्गायत्रीतिस्मृतावुधैः। (भारद्वाज स्मृति ६।१४६)

अर्थ–जो गायन अर्थात् जप करने की रक्षा करे वह गायत्री है।

गयान्त्रायते गायत्री (शङ्करभाष्य)

अर्थ–जो प्राणों की रक्षा करे वह गायत्री है।

गायन्तंत्रायते यस्माद् गायत्रीति ततःस्मृता (वृ० योगियाज्ञवल्क्य स्मृति ४।३५

अर्थ–जो जप करने वाले की रक्षा कर वह गायत्री है।

गातारंत्रायते यस्माद् गायत्री तेनगीयते। (स्कन्दपुराण काशीखण्ड ९।३)

अर्थ–जप करने वाले की रक्षा करे वही गायत्री है।

गायन्तंत्रायते देवि ? तद्गायत्रीतिगद्यसे।
गयाः प्राणा इति प्रोक्तास्तेषांत्राणादपीतिच। (वशिष्ठ)

अर्थ–हे देवि तुम उपासक की रक्षा करतीं हो अतः गायत्री आपका नाम है। गय प्राणों को कहते हैं प्राणों की रक्षा करने से गायत्री नाम पड़ा।

गीयतेतत्वमनया गायत्रीति (शङ्कराचार्य)

अर्थ–जिससे तत्व जाना जावे वह गायत्री है।

चतुर्विंशत्यक्षराणांसत्वेनगायत्रीछन्दः। (तारकानाथभाष्य १६।१०)

अर्थ–चौवीस अक्षरों से निर्मित छन्द की गायत्री कहते हैं।

गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किञ्च वाग्वैगायत्री, वाग्वाइदं सर्वंभूतम्, गायति त्रायते च (छान्दोग्योपनिषद् १२।१)

अर्थ–संसार में जितने भी स्थावर जङ्गमात्मक जो पदार्थ हैं वे सभी गायत्री हैं। वाक् ही सब कुछ है। वाक् ही गायन करती है और वह सबकी रक्षा करती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गायत्र्येवपरोविष्णुर्गायत्र्येव परः शिवः ।
गायत्र्येवपरो ब्रह्मा गायत्र्येव त्रयीततः ।। स्कन्दपुराण काशीखण्ड ९।५८

अर्थ–गायत्री ही परमात्मा विष्णु है। गायत्री ही परमात्मा शिव हैं। गायत्री ही परमात्मा ब्रह्मा हैं। अतः गायत्री से ही तीनों वेदों की उत्पत्ति हुई है।

परब्रह्मस्वरूपाच निर्वाणपददायिनी ।
ब्रह्मतेजोमयी शक्तिस्तदधिष्ठातृदेवता ।। (दे० भा० ९-१-४२)

अर्थ–गायत्री ब्रह्मस्वरूप है। मोक्षपद देने वाली है। ब्रह्म तेजोमयी शक्ति है और परब्रह्म ही उसका अधिष्ठातृदेवता है।

गायत्र्यास्तुपरन्नास्ति (संवर्तस्मृतिः)
नहिगायत्रीसमोजपः (व्याघ्रस्मृतिः)
गायत्रीपरमोमन्त्रः (अग्निपुराण)
गायत्र्यानपरञ्जप्यम् (पद्मपुराण)
नगायत्र्याः परंजप्यम् (कूर्मपुराण)
नगायत्र्याःपरंजप्यं नगायत्र्याःपरन्तपः ।
नगायत्र्याःपरंज्ञानं नगायत्र्याःपरंश्रुतम् (यमस्मृतिः)

अर्थ–गायत्री से बढ़ कर कोई जप नहीं है कोई तप नहीं है कोई ध्यान नहीं है कोई शास्त्र नहीं है (यमस्मृति)

दुर्लभासर्वमन्त्रेषु गायत्रीप्रणवान्विता ।
नगायत्र्या अधिकं किञ्चित्त्रयीषुपरिगीयते ।। (स्कन्द पु०)

अर्थ–सभी मन्त्रों में प्रणाव (ॐ) से युक्त गायत्री दुर्लभ है तीनों वेदों में गायत्री से बढ़ कर कोई मन्त्र नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गायत्रीञ्चैववेदाँश्चतुलयासमतोलयत् ।
वेदाएकत्रसाङ्गास्तुगायत्रीचैकतःस्मृता ।। (वृहद् यज्ञव० संहिता)

अर्थ–ब्रह्मा जी ने तराजू के एक पलड़े में अङ्ग सहित चारों वेद रक्खे और दूसरे पलड़े में गायत्री को स्थापित किया-तोलने से गायत्री का पलड़ा भारी रहा ।

गायत्रीं चैव वेदाँश्च ब्रह्मणातोलितापुरा ।
वेदेभ्यश्च सहस्त्रेभ्यो गायत्र्यतिगरीयसी ।। (वृहतपाराशर स्मृतिः)

अर्थ–इसका अर्थ पूर्वश्लोक की तरह है ।

सारांश

तीन जन्म के पापनाश करने में गायत्री से बढ़कर कोई मन्त्र नहीं है । प्रचीन काल में सभी महर्षियों ने श्री गायत्री महामन्त्र के प्रभाव से ही असंभव को संभव कर दिखाया था । श्री गायत्री की उपासना से ही ऋषि मुनि आदि प्रभावशाली तथा विशेष तेजस्वी हुये हैं । महर्षि विश्वामित्र को कौन नहीं जानता है । श्री गायत्री महामन्त्र के प्रभाव से अतुल तेजस्वी एवम् प्रवल प्रभावशाली हुये । महर्षि वशिष्ठ के ब्रह्मवल को देखकर "धिग् वलं क्षत्रियवलं वलं ब्रह्म वलं स्मृतम्" निश्चय करके गायत्री की उपासना से ही ब्रह्मर्षि कहलाये तथा अपूर्व ब्रह्म वल प्राप्त किया था । महर्षि वशिष्ठ आदि के समान ब्रह्मर्षि विश्वामित्र भी वेद आदि विषय में पूज्य माने जाते हैं । श्री मद्भागवत महापुराण स्कन्ध नवम अध्याय १५वें में स्पष्ट लिखा है कि महर्षि श्री ऋचीक का चरु (खीर) में स्थापित ब्रह्म तेज महर्षि विश्वामित्र में परिपूर्ण था । तथा स्वयम् गायत्री की विशेष उपासना से पूर्ण ब्रह्मर्षि होने के कारण गायत्री महामन्त्र के आचार्य मानने में महर्षियों ने पूर्ण निश्चय किया था ।

महर्षि गौतम-वशिष्ठ व अत्रि आदि ऋषियों ने गायत्री की उपासना से ही संसार में असंभव कार्य करके प्रभावशाली हुये हैं ।

—लेखकः-शिवदत्त शास्त्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

卐 श्री मद्गुरवेनमः 卐

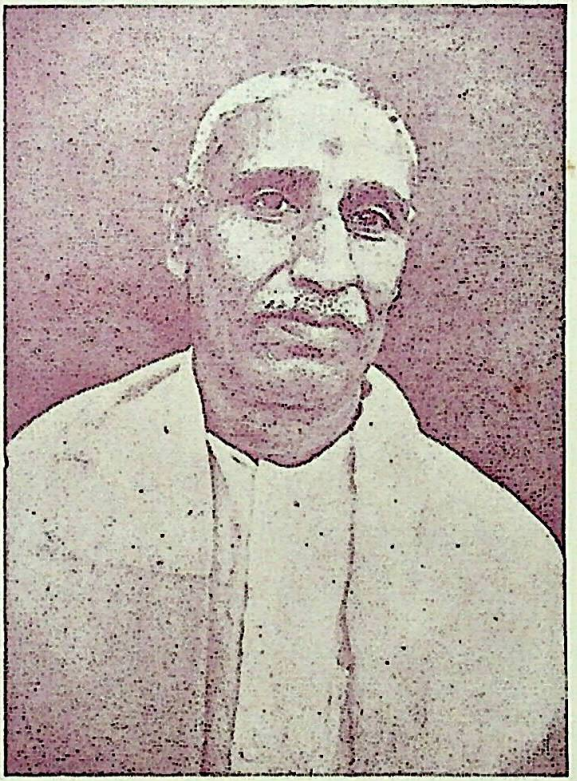

'श्रीशिवस्तोत्र' व 'श्रीहनुमत्स्तोत्र' आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता श्रीशिवसूत्ररहस्य आदि ग्रन्थलेखक प्रवक्ता—ज्योतिष—व्याकरण-तन्त्र-साहित्य-धर्मशास्त्र शादि के अति सुयोग्य विद्वान्—परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-प्रातः स्मरणीय श्री १०८ श्रोमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। श्री गायत्रीतत्वनिर्णयः ।।

नत्वागजाननन्देवंमातरं पितरङ्गुरुम् ।
क्रियते शिवदत्तेन गायत्रीतत्वनिर्णयः ।

।। श्रीगायत्रीमहामन्त्र ।।

ओम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् ।

अर्थ–हम उस परब्रह्म परमात्मा के तेज का ध्यान करते हैं जो पृथिवी, अन्तरिक्ष और स्वर्ग आदि लोकों का प्रकाशक है । जो प्राणों का भी प्राण हैं, जो सब दुखों से मुक्त करने वाला है जो सुखस्वरूप है अर्थात् जिसके ध्यान से परम सुख प्राप्त होता है । जो चराचर ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाला है । जो मानने योग्य है । तथा जो शुद्ध स्वरूप है । वह परब्रह्म हमारी बुद्धि को सत्कर्म में लगावे । गायत्री महामन्त्र का अर्थ विशेष विस्तृत आगे लिखा जायगा ।

।। सर्व साधारण के लिए जप का नियम ।।

यदि सन्ध्या–प्राणायाम–गायत्री का आवाहन विसर्जन तथा न्यास मुद्रा आदि का कुछ भी ज्ञान न हो तो स्नान करके शुद्ध होकर सूर्य को अर्घ्य देकर गायत्री महामन्त्र जपना चाहिए ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गायत्रीदेवी का ध्यान

ध्यानम् - मुक्ता-विद्रुम-हेम - नील-धवलच्छायै-र्मुखै-स्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटान्तत्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥
गायत्रींवरदाम्भयाङ्कुश-कशां शूलङ्कपालङ् गुणं-
शङ्खंचक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीम्भजे ।

ध्यान- जो मोती, मूंगा, स्वर्ण, नील, तथा स्वच्छ छाया वाले पांच मुखों से सुशोभित हैं तीन नेत्रों से युक्त हैं तथा स्त्रियोचित सम्पूर्णमङ्गलों से युक्त हैं तथा रत्नजटित चन्द्रकला से जो सुशोभित हैं । जो वर्ण स्वरूप (ब्रह्मस्वरूपिणी हैं) जिसके हाथों में बर, अभय, अंकुश कशा, शूल, कपाल, धनुष, शङ्ख, चक्र, तथा कमल का जोड़ा सुशोभित हो रहा है, ऐसी गायत्री देवी का मैं ध्यान करता हूं ।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्री गायत्र्यैदेव्यैनमः-ध्यानं समर्पयामि हाथ में रक्त पुष्प या रक्त चावल लेकर गायत्री देवी का ध्यान करे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गायत्री पूजा यन्त्रम्

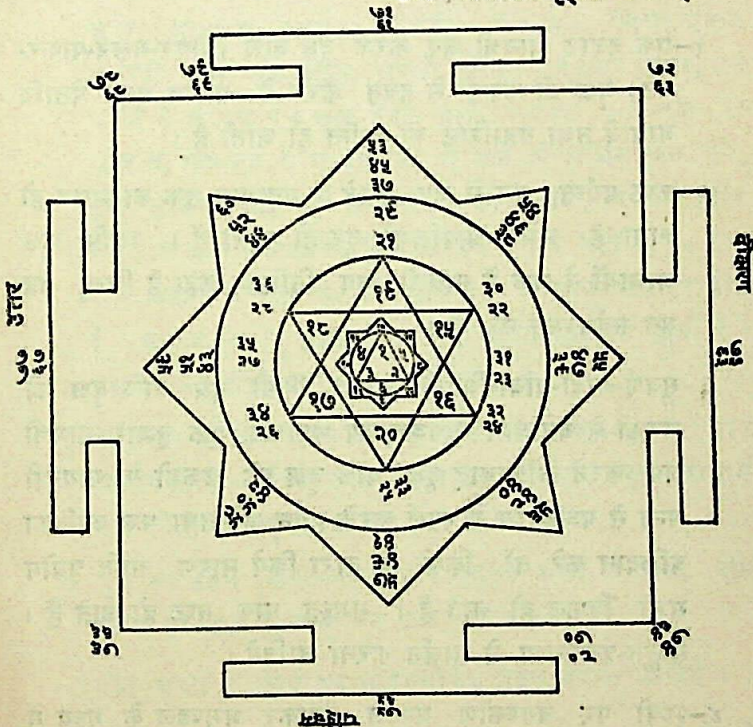

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कामनासिद्धिऔरउपद्रव शान्ति के लिये श्री गायत्री देवी के विविधि प्रयोग

१–एक हजार गायत्री जप करके दूध वाले (पीपर-गूलर-पाकर-बट) वृक्ष की लकड़ी से हवन करने से समस्त भूत, प्रेतादि वाधायें तथा ग्रहारिष्ट की शान्ति हो जाती है।

२–कण्ठ पर्यन्त जल में जप करने से महामृत्यु तक का शमन हो जाता है. सभो आपत्तियाँ दूर हो जाती हैं। यद्यपि कुछ आचार्यों ने जल में गायत्री जप निषिद्ध कहा है किन्तु वह मत सर्वसम्मत नहीं है।

३–सुवर्ण-चांदी-तांबा-मिटूटी अथवा किसी दूध वाले वृक्ष की लकड़ी से बने पात्र में पञ्चगव्य भर कर एक हजार गायत्री जप करने के पश्चात् दूध वाले वृक्ष की लकड़ी से गायन्त्री मन्त्र से पञ्चगव्य से स्पर्श करके हवन करे तथा फल आदिका वलिदान करे तो किसी के द्वारा किये मारण आदि प्रयोग सभी विफल हो जाते हैं। समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। सङ्केत-पञ्चगव्य से मार्जन करना चाहिये।

४–पृथ्वी पर चतुष्कोण मण्डल बनाकर भूमण्डल के मध्य में यदि भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, बेताल, किन्नर, भैरव, कूष्माण्ड आदि का उपद्रव हो तो एक हजार गायत्री जप करके एक लोहे की कील गाड़ देना चाहिये। "सभी भौतिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपद्रव शान्त हों, उपद्रवकारी नष्ट हों, भस्म हों, यह कहकर कील गाड़ देना चाहिये। सभी भयंकर अरिष्ट दूर होंगे।

५ एक कलश बिना छिद्र का हो, (सुवर्ण-चादी आदि का हो) उसमें जल भर के तीर्थों का आवाहन कर इलायची, चन्दन, कपूर, जायफल, गुलाब, मालती, विल्वपत्र, विष्णुकान्ता, सहदेवी, धान, जव, तिल, सरसों, पीपल, गूलर, पाकर, वट आदि के कोमल पत्र छोड़ देना चाहिये तथा २७ कुश भी छोड़ दे, एक हजार गायत्री जप से जल को अभिमन्त्रित करे, इस अभिमन्त्रित जल से मार्जन करने से तथा दैनिक पान करने मे अति कठिन पैशाचिक उपद्रव शान्त होते हैं। तथा सभी प्रकार के कल्याण प्राप्त होते हैं। अपमृत्यु भय दूर होते हैं। मनुष्य चिरायु होता है। सभी आपत्तियाँ दूर होती हैं। गायत्री जप करने वाला सिद्ध हो जाता है।

६–शनिवार के दिन पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर केवल १०८ बार जप करने से भौतिक उपद्रव तथा शत्रु जनित सम्पूर्ण बाधायें नष्ट होती हैं शत्रुगण परास्त होते है।

७ गुर्च का हवन (खण्ड-खण्ड करके हवन) करने से सभी रोग शान्त हो जाते हैं, मृत्यु भय टल जाता है।

नोट–गुरच के खण्ड दूध में भिगोकर हवन करना चाहिये।

८–आम के पत्ते दूध में भिगोकर गायत्री द्वारा हवन करने से सभी प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते है शरीर नीरोग रहता है।

९–मीठे वच का हवन करने से (गायत्री मन्त्र द्वारा) क्षय रोग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नष्ट हो जाता है। शरीर में, विशेष शक्ति बढ़ती हैं।

१०-दूध, दही, घृत का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा करने से राज-यक्ष्मा दूर हो जाती है।

११-गायत्रीमन्त्र द्वारा खीर का हवन करे, कुछ शेष रखकर उस शेष भाग को सूर्य को अर्पण करके खाने से भी राजयक्ष्मा रोग नष्ट होता है।

१२-शंख वृक्ष के पुष्पों का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा करने से कुष्ठ रोग दूर होता है।

१३-अपामार्ग (लटजीरा) का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा करने से मृगी-उन्मादि आदि रोग दूर होते हैं।

१४-गूलर, बट, पीपल, पाकर की लकडी का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा करने से प्रमेह रोग (बीसो प्रकार के प्रमेह) दूर होते हैं। तथा हाथी, घोड़ों, गौओं आदि के सभी रोग दूर होते हैं तथा सर्प, बिच्छू आदि विषधर जीवभय नष्ट होता हैं। लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। सकल कल्याण होते हैं।

१५-दूध तथा घृत को विल्व फल के खण्डों को गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से अपार लक्ष्मी को प्राप्ति होती है। धन की कमी नहीं रहती है। सुवर्ण से घर परिपूर्ण हो जाता है।

१६-सात दिन तक बिल्व फल, का हवन, विल्व वृक्ष की लकड़ी के द्वारा गायत्री मन्त्र से करने से धन धान्यलक्ष्मी को अपार प्रप्ति होती है। प्रतिदिन दो सौ आहुतियां देनी चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७–कोई भी पुरुष गायत्री मन्त्र को १०० वार जप कर जिस तरफ मिट्टी का ढेला फेंकता है, उस दिशा के शत्रु शक्तिहीन पड़ जाते हैं, यदि अग्नि से क्षति हो रही हो तो अग्नि शान्त हो जाता है (सर्प, बिच्छू, व्याघ्र आदि सामने नहीं आते।

१८–गायत्री के जप से कारागार से छूट सकता है, प्राणदण्ड (फांसी) को सजा छूट जाती है। घोर संकट दूर हो जातें हैं।

१९–गायत्री के जप के प्रभाव से समस्त व्याधियों से मुक्त होकर शतायु जीवन लाभ करता है। संसार के सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं गायत्रीजपके प्रभावसे।

२०–गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से अभिषेक करने से या गायत्री मन्त्र से किये गये हवन की भस्म धारण करने से भूत प्रेतादिक बाधा नष्ट हो जाती है। आपत्तियाँ नष्ट होकर पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

२१–रक्त पुष्पों की गायत्री मन्त्र द्वारा आहुति देने से तथा चावल का हवन करने से व बिल्व वृक्ष के फल, समिधायें तथा पत्रों, काहवन करने मे धन-धान्य, लक्ष्मी, सुवर्ण, मणि, मोती की उत्तम प्राप्ति होती है।

२२–धान के लावा घृत में मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से कन्या की प्राप्ति होती है कन्या यदि विवाह योग्य हो तो पूर्व लिखित क्रम से हवन करने से सुन्दर वर की प्राप्ति होती है।

२३–खीर का हवन गायत्री मन्त्र द्वारा यदि किया जायै तो निश्चित पुत्र होता हैं। गायत्री मन्त्र का जप भी होना चाहिये।

. Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४—कमल की आहुतियाँ गायत्री मन्त्र द्वारा देने से तथा दूर्वा, दूध, मधु, घृत से प्रतिदिन १००-१०० आहुति देने से एक सप्ताह में भयंकर रोग (मरण तुल्य कष्टद रोग) दूर होता है। तथा शमी वृक्ष की समिधा घृत में डुबो कर हवन करने से। वट वृक्ष की लकड़ी घृत में डुबोकर हवन करने से अपमृत्यु (मरण तुल्यकष्ट) दूर होकर शरीर नीरोग होता है।

२५—केवल दूध पीकर गायत्री जप करने से भी मरण तुल्य कष्ट शीघ्र दूर हो जाता है एक मास में बिलकुल स्वस्थ हो जाता है।

२६—विल्व वृक्ष के नीचे बैठकर एक मास तक गायत्री जप करने से राज्य प्राप्त हों जाता है। विल्व का मूल-फल-पत्र की अहुति देने सेभी राज्य प्राप्त होता है, लक्ष्मो प्राप्त होती है।

२७ पोपल वृक्ष की समिधाओं से हवन करने से तथा मन्दार (अर्क) की समिधा से हवन करने से मुकदमा में निश्चय विजयी होता है। सर्वत्र जहाँ जाता है ऐसा व्यक्ति विजयी होता हैं। यशो लाभ, धन लाभ, मान प्रतिष्ठा बढ़ती है।

२८—बेंत के पत्रों की अहुति अथवा खीर की आहुति गायत्री मन्त्र द्वारा सात दिन तक करने से तथा गायत्री मन्त्र जपने से निश्चय वर्षा होती है। अथवा नाभी पर्यन्त जल में खड़े होकर गायत्री जप करने से एक सप्ताह में वृष्टि होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९–जल में गायत्री मन्त्र द्वारा भस्म की आहुति देने से घोर वृष्टि बन्द हो जाती है।

३०–फूल को घृत में मिलाकर हवन करने से गायत्री मन्त्र द्वारा तो संसार वश में होता है।

३१–एक मास तक एक हजार गायत्री मन्त्र जप करने से आयु की वृद्धि होती है।

३२–पुत्र, लक्ष्मी, स्त्री, आयु, आरोग्य, विद्या, यशोलाभ, मान-प्रतिष्ठा आदि प्राप्ति के लिये ८ मास तक दैनिक एक हजार गायत्री मन्त्र का जप करने से पुत्रादि की भी प्राप्ति होती है

३३–११ माला दैनिक गायत्री जप करने से द्विज की कोई भी अभिलाषा अधूरी नहीं रह सकती है, सभी पूर्ण हो सकती हैं।

३४–एक पैर से बिना किसी आधार से खड़े होकर हाथ उठा कर गायत्री जप करे और रात्रि में हविष्यान्न खावे तो वह पुरुष एक वर्ष में ऋषि हो जाता है। दो वर्ष ऐसा करने से उसकी वाणी सिद्ध हो जाती है अर्थात् जो कहता है वह होकर ही रहता है। तीन वर्ष तक ऐसा करने से त्रिकालदर्शी हो जाता है। चार वर्ष तक ऐसा करने से सूर्य भगवान् प्रत्यक्ष आकर दर्शन देते हैं। पाँच वर्ष तक ऐसा करने से इच्छानुसार रूप धारण करने की शक्ति होती है। सात वर्ष तक ऐसा करने से देवत्व पद प्राप्त हो सकता है। दस वर्ष तक ऐसा करने से इन्द्र पद प्राप्त कर सकता है। ११-१२ वर्ष तक ऐसा करने से ब्रह्म पद प्राप्त कर सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३५–एक मास तक गायत्री मन्त्र जप करने से सुवर्ण की चोरी के पाप से मुक्त हो जाता है। गायत्री मन्त्र के प्रभाव से सुरापान पाप से मुक्त हो जाता है। गायत्री मन्त्र जप के प्रभाव से गुरु-तल्पगामित्व दोष दूर हो जाता है। ब्रह्म हत्या, गोहत्या, प्राण-हत्या, अगम्यागमनपाप अक्षम्याक्षम्यपाप, कन्या विक्रयपाप, ज्ञाताज्ञातपाप, असत्य वचन पाप, हजारों दुष्प्रतिग्रह पाप, अनेक जन्मार्जित पाप आदि गायत्रीमन्त्रजप प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं।

३६–गायत्री मन्त्र जप के प्रभाव से धर्म, अर्थ काम, मोक्ष, प्राप्त होता है। अष्ट सिद्धियाँ नव निधियाँ प्राप्त हो जाती है।

३७–गायत्री मन्त्र जप के प्रभाव से सभी देवता प्रत्यक्ष दर्शन देते है। साक्षात् जगज्जननी जगदम्बा भी प्रसन्न होकर दर्शन देती हैं।

३८–गायत्री मन्त्र जप से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। सारे संसार को करामलकवत् देखने लगता है।

३९–गायत्री मन्त्र जपने से भूत, भविष्य वर्तमान, काल का पूर्ण ज्ञाता हो जाता हैं।

४०–पलाश (ढाक) की समिधा से घृत में डुबोकर हवन करने से अनन्त लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

४१–खैर की लकड़ी या लाल चन्दन को गौ के घृत में डुबो कर हवन करने से भी अधिक लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२—मालती, चम्पा मन्दार की लकड़ी को गौ घृत में डुबो कर चन्द्र ग्रहण में हवन करने से भी लक्ष्मी की वशेष प्राप्ति होती है। बिना ग्रहण में भी गौ के घृत में केवल मन्दार की लकड़ी डुबो डुबो कर हवन करने से शीघ्र लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा घर में किसी भी प्रकार का भय कष्ट, रोग आदि नहीं रहता है सब प्रकार के कल्याण प्राप्त होते हैं।

४३—एक हजार बार गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित जल के स्नान से दरिद्रता, समस्त व्याधियाँ, समस्त पाप नष्ट होते हैं। प्रतिदिन एक हजार आहुति होनी चाहिये।

४४—लोध के पुष्प का हवन गौ के घृत में मिलाकर करने से चोर अग्नि तथा वायु से उत्पन्न होने वाले उपद्रव नहीं होते हैं। प्रतिदिन एक हजार आहुति होनी चाहिये।

४५—गर्मी के दिनों में गायत्री मन्त्र से एक लाख भस्म की आहुति देने से तथा जल के बाहर गायत्री मन्त्र से सूर्य को अर्घ्य देने से गर्भपात, प्रदर, प्रसूत आदि समस्त राग नष्ट होकर चिरञ्जीवी सन्तान उत्पन्न होती है।

४६—घृत में तिल मिलाकर अथवा जव मिलाकर अथवा केवल घृत से या पञ्चगव्य से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से सारी कामनायें पूर्ण होती हैं।

४७—लाल सरसों को गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से सभी शत्रु वश में हो जाते हैं।

४८—शहद सेन्धा नमक मिलाकर गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से मनुष्य वश में हो जाते हैं। दस हजार आहुति होनी चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४९–भिलावा के तेल की गायत्री मन्त्र द्वारा एक लाख आहुति देने से शत्रु देश से भाग जाते हैं। इसी प्रकार नीम (निम्ब) के पत्तों की आहुति देने का भी यही परिणाम होता है।

५०–गौ का घृत, शहद मिलाकर एक लाख आहुति गायत्री मन्त्र द्वारा देने से विदेश में गया हुआ व्यक्ति घर लौट आता है।

५१–लाल चन्दन, सफेद चन्दन, कपूर, चवल, यव, लोंग, जायफल घृत, मिश्री मिलाकर आम की लकड़ी से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन (एक लाख) करने से गायत्रीदेवी प्रसन्न हो कर माता, पिता, ब्राह्मण गौ आदि का वध करने वाले को, मद्य पीने वाले को, गुरु-स्त्री में घोर पाप करने वाले को, अन्य भी अगम्या स्त्रा आदि में पाप करने वाले को, सुवर्ण आदि की चोरी करने वाले को समस्त पापों से मुक्त कर देती है।

५२–गायत्री महामन्त्र के जप के प्रभाव से नव ग्रहादि अरिष्ट तथा शत्रुकृत समस्त भय व उपद्रव आदि शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

५३–गायत्री महामन्त्र के जप से संसार में कोई भी ऐसा कार्य नहीं है जो शीघ्र न हो सके।

५४–कुण्डलिनी जागरण तथा षट्चक्र विभेदन आदि सभी कार्य गायत्री जप से हो सकते हैं।

५५–तिल और घृत (गौ का घृत) से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से-समस्त वाधायें दूर होतीं हैं। तथा समस्त महान् पा नष्ट हो जाते हैं। अकालमृत्यु तथा किसी भी व्याधि का भ नहीं रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५६–तिल तथा घृत से हवन करने से-भूत-प्रेत-वैताल आदि का भय शीघ्र नष्ट होता है घर में अनेक प्रकारके कल्याण होते हैं।

५७–केवल घृत से गायत्री द्वारा हवन करने से सभी अरिष्ट दूर होते हैं मनुष्य चिरायु होता है।-

५८–लाल कमल के पुष्पों से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से सभी काम शीघ्र पूर्ण होते हैं। जिनका व्यापार में लाभ न होता हो नौकरी न लगती हो-तथा मनुष्य बेकार हो तो यही ५८ वां प्रयोग करना चाहिये।

५९–लाल कमल पुष्प-शहद-घृत-तिल इनसे हवन करने से कितना भी गरीब क्यों हो ६ महीने में धनवान् होता है।

६०–चन्दन - कपूर-चावल-यव-लवङ्ग - नारियल - घृत-मिश्री-आम की लकड़ी भगवती गायत्री देवी को विशेष प्रिय है-इनसे हवन करने से सभी कामनायें शीघ्र पूरी होती हैं।

६१–लाल कनेर के पुष्पों से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से सात दिन में सभी ज्वर नष्ट होते हैं।

६२–शहद घृत से हवन करने से परदेश में भाग गया या अपनी इच्छा से गया पुरुष शीघ्र घर आ जाता है।

६३–भिलावे के तेल से गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से किसीका भी उच्चाटन हो सकता है।

६४–केवल यवों में घृत मिलाकर हवन करने से सभी कामनायें पूर्ण होतीं है। पञ्चगव्य पीकर के (पान करके) हवन करना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६५–जल में बैठकर लाख की भस्म की आहुति गायत्रीमन्त्र द्वारा देने से-गर्भपात-प्रदररोग-सन्तान न प्राप्तियोग आदि सभी नष्ट होकर निश्चित कल्याण होता है चिरञ्जीव सन्तान का सुख होता है। यह प्रयोग जल में बैठ कर करना चाहिये। नाभि मात्र जल में खड़ा होकर २४ हजार गायत्री मन्त्र भी जपना चाहिये।

६६–लोध को गौ के घृत में गायत्रीमन्त्र द्वारा हवन करने से उसके घर में कभी चोरी नहीं होती है-अग्निभय भी नहीं रहता है। मिथ्याकलङ्क भी नहीं लगता है।

६७–पलाश की समिधायें घृत में मिलाकर हवन करने से मिरगी उन्मादरोग-आदि नष्ट होते हैं।

६८–तीन दिन तक उपवास करके एक आहुति गायत्री मन्त्र द्वारा करने से-समस्त व्याधियाँ नष्ट होतीं हैं-अपूर्व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

६९–जल में २४ हजार गायत्रीमन्त्र जप करके घृत शहद तिल से हवन करने से–मुकदमा में विजय प्राप्त होती है।

विशेष–ऊपर जो कामनाओं की सिद्धि के लिये जो प्रयोग लिखे हैं उन सभी प्रयोगों में सर्व प्रथम २४ हजार गायत्रीमन्त्र जप करके प्रयोग करना चाहिये।

विशेषवक्तव्य–गायत्री महामन्त्र के प्रभाव से-मारण-मोहन-उच्चाटन आदि सभी कार्य होसकते हैं (विधि भिन्न-भिन्न क्रमसे है। पूर्वकाल में जो शाप का वर्णन आता है वह श्री गायत्री महामन्त्र का ही महत्व जानना चाहिये। एवम् दूसरे से किये गये मारण आदि प्रयोग तथा शाप आदि प्रयोग को रोकने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क लिये भी गायत्री महामन्त्र से बढ़ कर दूसरा कोई मन्त्र नहीं है। यहां तककि श्रीगायत्री महामन्त्र के प्रयोग से अभि चार आदि प्रयोग करने वाले पर विपरीत फल हो सकता है इनसब विषयों पर विशेष विवेचन इसलिये नहीं किया जारहा है कि ऐसे प्रयोग सुलभ होने से साधारण लोग भी साधारण अपराध में ही ऐसे प्रयोगों का दुरुप्रयोग करने लगेंगे। अतः महर्षियों ने ऐसे प्रयोग गुप्त रक्खे हैं।

शारदातिलक के तन्त्र पटल में इनसब विषयों का पूर्णवर्णन है।

ऐसे प्रयोगों में–गायत्री महामन्त्र का क्रम विलोम रहता है–यथा–

त्यादचोप्रनःयोयोधि हिमधीस्य व देर्गोभयंण्रेर्वतुविसत्त स्वः वः भूर्भूः ॐ।

मारण आदि प्रयोग सदा निन्दित हैं अतः इनका विधान भी सदा गुप्त रखना चाहिये।

(१) शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी से मूर्ति बनावे–तेल चुपड़कर मिर्चों के साथ उस मूर्ति को जलाना चाहिये–ऐसा क्रम बराबर २१ दिन तक करने से शत्रु का विशेष अनिष्ट होता है। गायत्री का जप भी करना चाहिये।

(२) सरसों का तैल–धतूरा–कुचला–मिर्च–सबको मिलाकर गीला वस्त्र धारण कर गायत्री मन्त्र द्वारा हवन करने से दुष्ट जन का विशेष अनिष्ट होता है। यह प्रयोग वर्षाकाल में करने से शीघ्र फल दायक होता है।

(३) अपामार्ग के बीज तथा मिर्चों को पीसकर नमक मिलाकर क्वाथ बनाना चाहिये–दुष्ट जन की मूर्ति बनाकर–उसी क्वाथ में डालकर पकाने से दुष्ट जन का विशेष अनिष्ट होता है–गायत्री मन्त्र का जप भी साथ में होना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) नमक-हींग-जीरा का क्वाथ बनाकर- उसमें दुष्ट जन की मूर्ति प से दुष्ट जन का विशेष अनिष्ट होता है। २१ दिनतक यह प्र करना चाहिये। जप भी साथ साथ होना चाहिये।

संङ्केत—जहां मूर्ति का क्वाथ में पकाने या जलाने का विधान है (सोनापाठा) अर्थात् ऋत्र पेड़ की लकड़ी से दुष्ट जन की बनाना चाहिये। अथवा अर्क की जड़ से मूर्ति बनाने। मिर्च ग्रहण काली मिर्च (गोल मिर्च) का ग्रहण होता है। समस्त ऐसे प्र विना अपने गुरुदेव से समझे नहीं करना चाहिये अन्यथा क्षति की संभावना रहती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। विशेष आवश्यक वक्तव्य ।।

श्री गायत्री महामन्त्र वेदमन्त्रहोने से कूर्मचक्रनहीं विचारना चाहिये। तान्त्रिक मन्त्रों-में कूर्मचक्र विचार आवश्यक है।

ग्रन्थों में अनेक प्रकार के न्यास लिखे हैं सभी न्यास करने पर श्री गायत्री मन्त्र जपने का समय नहीं मिल सकेगा तथा न्यास करते-करते चित्त अशांत हो सकता है अतएव साधारण न्यास करके एकान्त स्थान में सावधान चित्त से गायत्री मन्त्र का जप करना चाहिये। न्यासों के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिते। यदि कोई शक्तिमान् सभी न्यास कर सके तो करे अच्छा है किन्तु न्यास न करने पर कोई भी दोष नहीं है—देवी भागवतस्कन्ध ग्यारहवें अध्याय १६ वें श्लोक ९२ में स्पष्ट लिखा है कि—एतन्न्यासविधिं केचिन्नेच्छन्तिजपतत्पराः। ततोध्यायेन् महादेवीञ्जगन्मातरमम्बिकाम्।। अपिच दे० भा० स्क० १२ अ० १ श्लोक १० न्यासान् करोतुवामावागायत्रीमेव चाभ्यसेत्। ध्यात्वा निर्व्याजयावृत्या सच्चिदानन्दरूपिणीम्। ।।१०।। इत्यादि प्रमाणों से स्पष्ट है कि न्यास करे या न करे जप करने से अवश्य कल्याण हो सकता है। इसी प्रकार श्री गायत्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र के जपने के पूर्व २४ मुद्रायें प्रदर्शित करने का तथा जप के अन्त में ८ मुद्राये प्रदर्शित करने का विधान श्री देवी भागवत आदि ग्रन्थों में है किन्तु श्री गायत्री महामन्त्र वेद मन्त्र है। मुद्रायें तान्त्रिक विधि में ही परमावश्यक हैं, बहुत से आचार्य मुद्रायें प्रदर्शित करना आवश्यक नहीं मानते हैं तथा बहुत से ग्रन्थों में मुद्रा प्रदर्शित करने का लेख भी नहीं है, अतएव मुद्रा प्रदर्शित न करने में कोई भी दोष नहीं है। यदि कोई मुद्रा प्रदर्शित करता हैं तो हानि भी नहीं है बहुत अच्छा है। तान्त्रिक मन्त्रों में ही मुद्रा प्रदर्शित करने का विधान है।

श्रीगायत्री देवी को ब्रह्मा-वशिष्ठ तथा विश्वामित्र ने शाप दिया है ऐसी कथा पुराणों में आई हैं-शाप दूर करने के लिये केवल ब्रह्मा, वशिष्ठ, विश्वामित्र, इन तीनों का स्मरण करने ही से तीनों का शाप दूर हो जाता है। देवी भागवत स्कन्ध ११ अध्याय १६ वें श्लोक सङ्ख्या ७३-७४

ब्रह्मणः स्मरणेनैव ब्रह्मशापोनिवर्ततें विश्वामित्रस्मरणतो विश्वामित्रस्यशापतः ॥ वशिष्ठस्मरणादेव तस्यशापो विनश्यति ॥ स्पष्ट लिखा है। इतना ही कहने से शाप दूर होता है।

सारांश—श्री गायत्री महामन्त्र वेदमन्त्र है इसके जपने में न्याश मुद्रा शापोद्धार आदि यदि न भी किये जायें तो कोई दोष नहीं है यदि कोई सज्जन करते हैं तो करें बहुत अच्छा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शापकारहस्य

किसी समय ब्रह्मा वशिष्ठ-विश्वामित्र-इन तीनों देवताओं ने ब्रह्मशक्ति प्राप्ति के लिये श्री गायत्रीदेवी की उपासना की थी जब श्रीगायत्रीदेवी प्रसन्न नहीं हुई तब इन तीनों ने श्रीगायत्री को शाप दे दिया कि शक्तिहीन हो जाये। पश्चात् देवताओं ने जब ब्रह्माजी आदि की प्रार्थना की तब इन तीनों ने शापोद्धार का मार्ग बतलाया—यह प्रमाण पुराणों में मिलता है किन्तु समझ में नहीं आ रहा है कि जब ये तीनों देवता ब्रह्मशक्ति प्राप्त करने के लिये ही तपस्या कर रहे थे गायत्रीदेवी की, तब शाप देने की क्षमता कहाँ से आगई। ब्रह्मा आदि सभी देवताओं में जो भी शक्ति थीं वह श्री गायत्री देवी की ही थी। सभी देवता सदा श्रीगायत्रीदेवी का ध्यान करते हैं।

देवीभागवते—ब्रह्मादयोऽपि सन्ध्यायान् तान्ध्यायन्ति जपन्तिच ॥
वेदा जपन्ति तान्नित्यं वेदोपास्या ततः स्मृता ॥

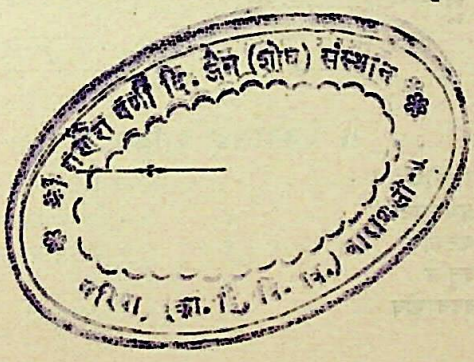

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गायत्री पूजा यन्त्रम्

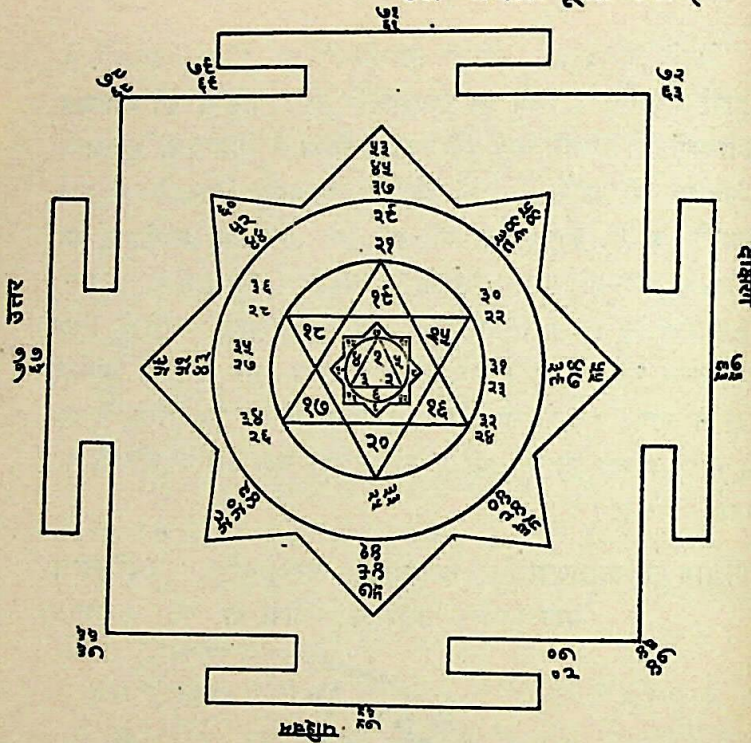

॥ देवतासङ्ख्याविवरणम् ॥

१—त्रिकोणे	—	६	६—द्वितीयाष्टदलमूले	—	८
२—प्रथमाष्टदले	—	८	७—द्वितीयाष्टदलमध्ये	—	८
३—षट्कोणे	—	६	८—द्वितीयाष्टदलाग्रे	—	८
४—वर्तुले	—	८	९—भूपुरे	—	१०
५—तद्वाह्यवर्तुले	—	८	१०—भूपुरवाह्ये	—	१०
			योग		८०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्रीगायत्रीपूजाविवरण ॥

इस गायत्री पूजा यन्त्र को तांवे के पत्र पर भी खुदवाकर प्रतिष्ठा करके दैनिक पूजन करने से सकल कामनायें पूर्ण होती हैं। यंत्र में लिखे अङ्कानुसार देवताओं का आवाहनादि पूजन करे। आगे देवता लिखे हैं।

— त्रिकोण में —

१— पूर्वकोण में— ॐ गायत्र्यैनमः।
२— निर्ऋतिकोण में— ॐ सावित्र्यैनमः।
३— वायुकोण में— ॐ सरस्वत्यैनमः।
४— मध्य में— ॐ ब्रह्मणेनमः।
५— मध्य में— ॐ विष्णवेनमः।
६— मध्य में— ॐ रुद्रायनमः।

इन देवताओं का पूजन करके पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धि म्मेदेहि शरणागतवत्सले ॥ भक्तया समर्पयेतुभ्यम् प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥ इतना कह करके पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताःसन्तु" यह कहकर प्रथमावरण देवता ओंका पूजनादि कर्म समाप्त करे।

॥ इतिप्रथमावरणविवेचनम् ॥

अथ प्रथम अष्टदल में द्वितीयावरण देवता प्रारम्भ हैं—

७— पूर्व में— आदित्यायनमः।
८— दक्षिण में— ॐ भानवेनमः।
९— पश्चिम में— ॐ भास्करायनमः।
१०— उत्तर में— ॐ रवयेनमः।
११— आग्नेय में— ॐ उषायैनमः।
१२— निर्ऋति में— ॐ प्रज्ञायैनमः।
१३— वायुकोण में— ॐ प्रभायैनमः।
१४— ईशानकोण में— ॐ सन्ध्यायैनमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार द्वितीयावरण देवताओं का पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पयेतुभ्यन् द्वितीयावरणार्चनम्" इतना कह करके पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यहु कह कर द्वितीयावरणदेवतापूजनादिक कर्म समाप्त करे।

॥ इतिद्वितीयावरणविवेचनम् ॥

यहाँ से तृतीयावरणदेवताआरम्भहोंगेषट्कोणमें—

१५– आग्नेय में— ॐ ब्रह्मणेहृदयायनमः।
१६– नैर्ऋत्य में— ॐ विष्णवे शिरसे स्वाहा।
१७– वायुकोण में— ॐ रुद्रायशिखायैवषट्।
१८– ईशान कोण में— ॐ ईश्वरायकवचायहुँ।
१९– पूर्व दिशा में— ॐ सदाशिवायतेत्रत्रयायवौषट्।
२०– पश्चिम दिशा में— ॐ सर्वात्मनेनमः अस्त्रायफट्।

इस प्रकार तृतीयावरण देवताओं का पूजन कर–पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहिशरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पयेतुभ्यन्तृतीयावरणार्चनम् ॥३॥ इतना कहकर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहकर तृतीयावरण देवता पूजनादि कर्म समाप्त करे।

॥ इति तृतीयावरण विवेचनम् ॥

यहाँ से आगे चतुर्थावरणदेवताआरम्भहोंगेवर्तुलमें (गोलवृत्त में)—

२१– पूर्व में— ॐ ब्रह्मादिन्यैनमः।
२२– अग्निकोण में— ॐ प्रभायैनमः।
२३– दक्षिण में— ॐ नित्यायैनमः।
२४– निर्ऋतिकोण में— ॐ विश्वम्भरायैनमः।
२५– पश्चिम में— ॐ विशालिन्यैनमः।
२६– वायुकोण में— ॐ प्रभावत्यैनमः।
२७– उत्तर में— ॐ जयायैनमः।
२८– ईशान कोण में— ॐ शान्त्यैनमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार चतुर्थावरण देवताओं का पूजन कर–पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागत वत्सले भक्त्या समर्पयेतुभ्यञ्चतुर्थावरणार्चनम् ॥४॥ इतना कह कर "पूजितास्तर्पिताःसन्तु" यह कहकर चतुर्थावरणदेवतापूजनादि कर्म समाप्त करे।

॥ इति चतुर्थावरण विवेचनम् ॥

आगे पञ्चमावरण देवता प्रारम्भ होंगे वृत्त के कुछ बाहर में—

२९– पूर्व में— ॐ कान्त्यैनमः।
३०– अग्नि कोण में— ॐ दुर्गायैनमः।
३१– दक्षिण में— ॐ सरस्वत्यैनमः।
३२– निर्ऋतिकोण में —ॐ विश्वरूपायैनमः।
३३– पश्चिम में— ॐ विशालायैनमः।
३४– वायव्य कोण में— ॐ ईशायैनमः।
३५– उत्तर में— ॐ चापिन्यैनमः।
३६– ईशान में— ॐ विमलायैनमः।

इस प्रकार पंचमावरण देवताओं का पूजन कर–पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्यासमर्पयेतुभ्यम्पञ्चमावरणार्चनम् ॥५॥ इतना कहकर पञ्चमावरण देवता पूजनादि कर्म समाप्त करे।

॥ इति पञ्चमावरणविवेचनम् ॥

अर्थ षष्ठावरण देवता प्रारम्भ होंगे द्वितीयाष्टदलमूल में—

३७– पूर्व में— ॐ अपहारिण्यैनमः।
३८– अ० को० में—ॐ सूक्ष्मायैनमः।
३९– दक्षिण में—ॐ विश्वयोन्यैनमः।
४०– निर्ऋत में— ॐ जयावहायैनमः।
४१– पश्चिम में— पद्मालयायैनमः।
४२– वायव्य कोण में— ॐ परायैनमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४३– उत्तर में— शोभायैनमः ।

४फ– ईशान में— ॐ पद्मरूपायैनमः ।

इस प्रकार षष्ठावरण देवताओं का पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिमेदेहि शरणागतवत्सले । भक्त्या समर्पयेतुभ्यं षष्ठकावरणार्चनम् ॥६॥ इतना कह करके पुष्पाञ्जलि देकर पूजितास्तर्पितासन्तु" यह कह कर षष्ठकावरण देवता पूजनादिकर्म समाप्त करे ।

आगे सप्तमावरण देवता प्रारम्भ होंगे द्वितीय अष्टदल के मध्य में—

४५– पूर्व में — ॐ में अं ब्राह्म्यैनमः ।

४६– अग्निकोण में— ॐ ईंमाहेश्वर्य्यैनमः ।

४७– दक्षिण में— ॐ ॐ कौमार्यैनमः ।

४८– निर्ऋति कोण में— ॐ ऋं वैष्णव्यैनमः ।

४९– पश्चिम में— ॐ ॡ वाराह्यैनमः ।

५०– वायव्यकोण में— ॐ ऐं इन्द्राण्यैनमः ।

५१– उत्तर में— ॐ औं चामुण्डायैनमः ।

५२– ईशानकोण में— ॐ अः महालक्ष्म्यैनमः ।

इस प्रकार सप्तमावरण देवताओं का पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले ॥ भक्तया समर्पयेतुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥ इतना कह कर पुष्पाञ्जलि देकर पूजितास्तर्पिताःसन्तु" यह कहकर सप्तमावरणदेवतापूजनादि कर्म समाप्त करे ।

॥ इतिसप्तमावरण विवेचनम् ॥

आगे अष्टम आवरण के देवता प्रारम्भ होंगे द्वितीय अष्टदल के अग्रभाग में –

५३– पूर्व में— ॐ सों सोमायनमः ।

५४– अग्निकोण में— ॐ भौं भौमायनमः ।

५५– दक्षिण में— ॐ बुं बुधायनमः ।

५६– नैर्ऋत्य में— ॐ बृं बृहस्पतयेनमः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५७– पश्चिम में— ॐ शुं शुक्रायनमः ।
५८– वायव्य में— ॐ शं शनैश्चरायनमः ।
५९– उत्तर में - ॐ रां राहवेनमः ।
६०– ईशान में— ॐ कें केतवे नमः ।

इस प्रकार अष्टमावरण देवताओं का पूजन कर पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पयेतुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ।। इतना कह कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तार्पिताः सन्तु कहकर अष्टमावरण-देवतापूजनादि कर्म समाप्त करे ।

।। इति अष्टमावरणदेवता समाप्त ।।

आगे नवमावरण देवता प्रारम्भ होंगे भूपुर में—

६१– पूर्व में— ओं लं इन्द्रायनः ।
६२– अग्निकोण में— ॐ रं अग्नेयनमः ।
६३– दक्षिण में— ॐ मं यमायनमः ।
६४– निर्ऋति में— ॐ क्षं निर्ऋतयेनमः ।
६५– पश्चिम में— ॐ वं वरुणायनमः ।
६६– वायव्य में— ॐ वां वायवेनमः ।
६७– उत्तर में— ॐ सों सोमायनमः ।
६८– ईशान में— ॐ ईं ईशानायनमः
६९– ईशान पूर्वमध्य में— ॐ आं ब्रह्मणेनमः ।
७०– निर्ऋति पश्चिम मध्य में— ॐ अं अनन्तायनमः ।

इस प्रकार नवमावरण देवताओं का पूजन कर–पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले । भक्तया समर्पयेतुभ्यन्नवमावरणार्चनम् । इतना कहकर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहकर नवमावरण देवता पूजनादि कर्म समाप्त करे ।

।। इति नवमावरण विवेचनम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ दशम आवरण के देवता प्रारम्भ होंगे— भूपुरकेकुछहीदूर—

७१— पूर्व में— ॐ वं वज्रायनमः ।
७२— आग्नेय में— ॐ शं शक्तयेनमः ।
७३— दक्षिण में— ॐ दं दण्डायनमः ।
७४— नैर्ऋत्य में— ॐ खं खड्गायनमः ।
७५— पश्चिम में— ॐ पं पाशायनमः ।
७६— वायव्य में— ॐ अं अङ्कुशायनमः ।
७७— उत्तर में— ॐ गं गदायैनमः ।
७८— ईशान में— ॐ त्रिं त्रिशूलायनमः ।
७९— ईशान पूर्व मध्य में— ॐ पं पद्मायनमः ।
८०— निर्ऋति पश्चिम मध्य में— ॐ चं चक्रायुधायनमः ।

॥ इति दशम आवरण देवता समाप्त ॥

इत्यावरण देवताः स्थापयेत् तदनन्तरम्प्रपूजयेत् ।

इस प्रकार आवरण देवताओं को स्थापित करके पूजन करे पश्चात् पुष्पाञ्जलि लेकर "अभीष्टसिद्धिम्मेदेहि शरणागतवत्सले । भक्त्यासमर्पयेतुभ्यन्द-शमावरणार्चनम्" यह पड़कर पुष्पाञ्जलि देकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' ऐसा कहकर दशमावरण देवता पूजन समाप्त करे ।

इत्थमावरणैर्देवीन्दशभिः परिपूजयेत् । धर्मार्थकाममोक्षाणाम्भोक्तास्या-द्द्विजसत्तमः ।

विशेष सङ्केत—इस प्रकार समस्त आवरण पूजन विधिवत् करने के पश्चात्-घटस्थापनादि कार्य करके भगवती श्री गायत्रीदेवी की मूर्ति स्वर्णमयी या रजतमयी आदि किसी भी धातु की हो उसकी प्राण प्रतिष्ठा पर्यन्त सभी संस्कार करके विधिवत् पूजन करे (यदि धातुमयी मूर्ति न हो तो चित्र में भी पूजनादि कार्य करे)

पश्चात् गायत्री महामन्त्र का जप करना चाहिये । यदि यन्त्र न हो तो स्नान करके सूर्य को अर्घ्य देकर जप करे अधिक जो जितना विधान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर सके करे। कलियुग में विशेष विधान की आवश्यकता नहीं है। केवल देवता में तन्मय होकर देवता का गुणगान ही सर्वश्रेयस्कर है। शीघ्र देवता प्रसन्न होता है।

॥ श्रीगायत्रीमहामन्त्र ॥

ॐभूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो देवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्॥
यही श्री गायत्री है इसका जप करना चाहिये।

॥ अथ प्रसङ्गवश षट्चक्र विवेचन ॥

चक्र	स्थान	दल	देवता
१– मूलाधार चक्र	गुदा के समीप	४	ब्रह्मा
२– स्वाधिष्ठान चक्र	लिङ्ग के समीप	६	विष्णु
३– मणिपूर चक्र	नाभि स्थान में	१०	रुद्र
४– अनाहत चक्र	हृदय में	१२	ईश
५– विशुद्धि चक्र	कण्ठ में	१६	सदाशिव
६– आज्ञा चक्र	भ्रूमध्म में	२	शम्भु
७– सहस्त्रार (शून्य चक्र) आदि।	ब्रह्मरन्ध्र में	१००	कामेश्वरी

तत्व	गुण	मात्रायें
१– पृथ्वी	गन्ध	व श ष स
२– जल	रस	व भ म य र ल
३– तेज	रूप	ड ढ ण त थ द ध न प फ
४– वायु	स्पर्श	क ख ग घ ङ च छ ज झ ट ठ
५– आकाश	शब्द	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
६– मन	महत्	ह क्ष
७– आत्मा		

सङ्केत—हठ योग में इन चक्रों के अतिरिक्त—१. चित्रकूट २. श्री हाट ३. गोल्लाट ४. औटपीठ ५. भ्रमर गुफा ६. ब्रह्मरन्ध्र आदि चक्र और भी हैं। यह विषय महात्माओं से प्राप्त हुआ तथा शास्त्राधार भी है।

॥ इति चक्र विवेचन ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ गायत्री मन्त्र के प्रत्यक्षर के ऋषि आदि का चक्र

	तत्पुरुषाय विद्महे	महादेवाय धीमहि	तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्	तत्पुरुषाय विद्महे	वक्रतुण्डाय धीमहि	तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्	तत्पुरुषाय विद्महे	सुवर्णपक्षाय धीमहि	तन्नो गरुडः प्रचोदयात्		
१— तत्	वामदेव	गायत्री	अग्नि	परा	चम्पा	पृथ्वी	सुमुख
२— स	अत्रि	उष्णिक	प्रजापति	प्रिया	अतसीपुष्प	जल	सम्पुट
३— वि	वशिष्ठ	अनुष्टुप्	चन्द्रमा	सत्या	मूँगा	तेज	वितत
४— तु	शुक्र	बृहती	ईशान	विश्वा	स्फटिक	वायु	विस्तृत
५— र्व	कण्व	पङ्क्ति	रवि	भद्रविलासिनी	कमलपुष्प	आकाश	द्विमुख
६— रे	पराशर	धृति	रवि	प्रभावती	रविवर्ण	गन्ध	त्रिमुख
७— णि	विश्वामित्र	जगती	धृति	जया	शङ्खचन्द्र-कुन्द	रस	चतुर्मुख
८— यम्	कपिल	शक्वरी	मित्रावरुण	शान्ता	रक्त कमलदल	रूप	पञ्चमुख
९— भ	शौनक	अतिशक्वरी	भग	कान्ता	पद्मराग	शब्द	षण्मुख
१०— र्गो	याज्ञवल्क्य	वेष्टाति	ईश्वर	दुर्गा	इन्द्रनीलमणि	स्पर्श	अधोमुख
११— दे	भरद्वाज	अतिधृति	गणेश	सरस्वती	मोती	पायु	व्यापकाञ्जलि
१२— व	जमदग्नि	विराट्	त्वाष्ट्र	विद्रुमा	कुङ्कुम	पाद	शकट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

१३–स्य	गौतम	प्रस्तार	पौष्ण	विशालेशा	काजल	हस्त	यमपाश
१४–धी	मुद्गल	पङक्ति	इन्द्राग्नि	विमला	रक्तचन्दन	वागिन्द्रिय	ग्रथित
१५–म	वेदव्यास	कृति	वायु	तपोऽपहारिणी	वैडूर्य्य	नासिका	सनमुखोन्मुख
१६–हि	लोमश	प्रकृति	वामदेव	सूक्ष्मा	मधु	घ्राण	प्रलम्ब
१७–धि	अगस्त्य	आकृति	मैत्रावरुणि	विश्वयोनि	कुन्ददुग्ध	जिह्वा	मुष्टिक
१८–यो	कौशिक	विकृति	विश्वदेव	जया	हल्दी	चक्षुः	मत्स्य
१९–यो	वत्स	संस्कृत	मातृक	वशा	सूर्यकान्तमणि	त्वचा	कूर्म
२०–नः	पुलस्त्य	अक्षरपंक्ति	विष्णु	पद्मालया	सुग्गे की पूंछ	श्रोत्र	वाराहक
२१–प्र	माण्डूक	भूः	वसुगण	परा	कमल	प्राण	सिंहाकान्त
२२–चो	दुर्वासा	भुवः	रुद्र	शोभा	केतकी	अपान	महाकान्त
२३–द	नारद	स्वः	कुबेर	भद्रा	मल्लिका	व्यान	मुद्गर
२४–यात्	कश्यप	ज्योतिष्मती	अश्विनी	त्रिपदा	कनैर पुष्प	समान	पल्लव

कुमार

सङ्केत :– जप के अन्त में ८ मुद्रायें १– सुरभी २– ज्ञान ३– वैराग्य ४– योनि ५– कूर्म ६– पङ्कज ७– लिङ्ग ८– निर्वाण करने का विधान है । कुछ आचार्य लोग इन ८ मुद्राओं को (परोरजसेसावदोम्) यह गायत्री का चतुर्थ चरण है इस चरण के प्रतिअक्षर की एक-एक मुद्रा मानते हैं । परन्तु इसका पुष्ट प्रमाण नहीं मिला है । विचार से तो शुद्ध प्रतीत होते हैं । अनेक आचार्य्यों ने बतलाया है ।

जपनियमः-भिन्नपादातु गायत्री ब्रह्महत्याप्रणाशिनी । अभिन्नपादा गायत्री ब्रह्महत्यां प्रयच्छति दे०भा० ११ स्कन्ध ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूरादिसप्तव्याहृतिव्याख्या ।

भूराद्याश्चैव सत्यान्तास्सप्तव्याहृतयस्तथा ।
लोकास्तएवसप्तैते उपर्युपरि संस्थिताः ।।१।।
सप्तव्याहृतयः प्रोक्ताः पुराकल्पेस्वयम्भुवा ।
तएवसप्तछन्दासि लोकास्सप्त प्रकीर्तिता ।।२।।

।। भूः ।। (१)

भवन्ति चास्मिन्भूतानि स्थावराणि चराणि च ।
तस्माद् भूरितिविज्ञया प्रथमाव्याहृतिस्स्मृता ।।१।।

व्याख्या—भूधातोः क्विपि भूरिति-पूर्ण इत्यर्थः अथवा भवन्त्यस्माद् भूतानि-इतिभूरिति । अधिकरणार्थकःक्विप् सर्वजीवोत्पादक इत्यर्थः किञ्च सकल सृष्ट्युत्पादकत्वेन भूरिति । । भूतिवरत्वाद् भूरिति । लक्ष्मीपतित्वाद् भूरिति ।

हिन्दी भावार्थ—जो परिपूर्ण हो वह भू इति । जिससे समस्त प्राणियों की उत्पत्ति हो वह भू इति । जो लक्ष्मी का पति हो वह भू कहलाता है । जो प्राणों का प्राण हो वह भू कहलाता है ।

।। भुवः ।। (२)

भवन्ति भूयो भूतानि उपयोगक्षयेपुनः ।
कल्पान्तउपभोगाय भुवस्तस्मात् प्रकीर्तितः ।।२।।

व्याख्या—भावयति स्थापयति विश्वमिति भुवः । अन्तर्भावितण्यर्थादसुनिछान्दसत्वाद् गुणाभावः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथवा–भावनाज्जगदुत्पादनाद् भुवः ण्यर्थ विशिष्ट भूधातोः कः प्रत्ययः ।

अथवा--भवत्यस्मिज्जगति भूर्महालक्ष्मीस्ततो वरो लक्ष्मीश्रेष्ठ इत्यर्थः ।

अथवा–अनन्त सुखस्वरूपत्वाद् वा भुवः, जगदुत्पाद कत्वाद्वा ।

हिन्दी भावार्थ—जो अनन्त सुख स्वरूप हो । जो संसार को स्थापित करे । जो संसार का उत्पादक हो वह भुवः कहलाता है । तथा जो दुखों से मुक्त करने वाला हो वह भुवः कहलाता है ।

॥ स्वः ॥ (३)

शीतोष्णवृष्टितेजांसि जायन्ते तानि वैसदा ।
आलयः सुकृतानाञ्चस्वर्लोकस्य उदाहृतः ॥३॥

व्याख्या–स्वरितिस्वर्गे-परलोकेच-स्वश्शब्दः सुखवाची ।

हिन्दी भावार्थ—स्वका अर्थ स्वर्ग अथवा परलोक भी है । अथवा जो सुख स्वरूप हो । शीत-उष्ण-वृष्टि तेज जहां हो तथा पुण्यात्मा जहां हों ।

॥ महः ॥ (४)

अधरोन्तरलोकेभ्योमहांश्च परिमाणतः ।
हृदयंसप्तलोकानां महस्तेनप्रकथ्यते ॥४॥

व्याख्या–महपूजायाम्-अस्माद्धातोः-असुनिप्रत्यये । महः पूज्यः-इत्यर्थ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिन्दी भाषार्थ—सप्तलोकों में महः यह एक लोक है। अथवा जो पूज्य हो मह शब्द से गृहीत होता है।

॥ जनः ॥ (५)

कल्पदाहे प्रलीनास्तु प्राणिनस्तु पुनः पुनः ।
जायन्ते च पुनः स्वर्गे जनस्तेन प्रकीर्तितः ॥५॥

व्याख्या—जनजननेधातोः कर्तर्य्यसुनिप्रत्यये-जन-इति । सर्वजनकर्ता । सकलजननकर्तृत्वाज्जनः ।

हिन्दी भाषार्थ—कल्पान्त से दग्ध होने से जो प्राणी पुनः-पुनः स्वर्ग में उत्पन्न हों अतएव उसको जन कहते हैं अथवा सकल जन का जो कर्ता हो वह जन कहलाता है।

॥ तपः ॥ (६)

सनकाद्यास्तपस्सिद्धा ये चान्ये ब्रह्मणःसुताः ।
अधिकारनिवृत्तास्तु तिष्ठन्त्यस्मिन्तपस्ततः ॥६॥

व्याख्या—तप् आलोचनेऽस्माद् धातो रसुनिप्रत्यये-तप इति सर्वविषयकालोचनकर्तृत्वात्तपः । आलोचनकर्ता ।

हिन्दी भाषार्थ—जिस लोक में सनकादि ऋषीवर अधिकार निवृहोकर रहते हैं वह तपलोक है।

सत्यम् (७)

सत्यन्तु सप्तलोकावै ब्रह्मणस्सदनन्ततः ।
सर्वेषाञ्चैव लोकानाम्मूर्ध्निसन्तिष्ठते सदा ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानकर्मप्रतिष्ठानान्तथा सत्यस्यभाषणात् ।
प्राप्यते चोपभोगार्थम्प्राप्यन्नच्यवते पुनः ॥८॥
तत्सत्यं सप्तमोलोकस्तस्मादूर्ध्वन्न विद्यते ।
व्याख्या–उत्तमज्ञानानन्दरूपत्वात् सत्यम् ।
अथवा–कालत्रयाऽबाध्यत्वं सत्वत्वम् ॥

हिन्दी भाषार्थ – ब्रह्मा जी का लोक का नाम सत्यलोक है जहां सभी सत्य बोलते हैं। उस लोक से ऊपर लोक नहीं है। जहां उत्तम ज्ञान तथा आनन्द रूप होने से सत्य कहते हैं। तीनों काल में भी जहां सत्य का बाध नहीं होता है वह सत्य लोक है।

ओमिति

व्याख्या–सिद्धानाञ्चैवसर्वेषाम्वेदवेदान्तयोस्तथा ।
अन्येषामपिशास्त्राणान्निष्ठाप्योङ्कारउच्यते ॥

व्याख्या–अवधातुर्गतिकर्मा - प्रवेशकर्माचअव्यतेप्रविश्यते गुणैरितिओम् अथवा अवति प्रविशतिगुणानिति ओम् ।

अवधातोच " अवतेष्टिलोपः " इत्यनेनोणादिसूत्रेण मन्प्रत्यये टिलोपे सति " ज्वरत्वर० " इत्यादि कृदन्त सूत्रेण वकास्योपधायाश्चद्वयोरूठोः सवर्णदीर्घत्वे गुणेसति । ओम्' इति सिद्ध्यति । अवतिरक्षति । जानाति-गच्छति व्याप्नोति । प्रकाशयति । प्रीणयति । वर्द्धयति । लीनङ्करोति । ददाति । हिंसति । आलिङ्गयति । प्रदर्शयति । दीप्यति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इच्छति। चालयति। पाचयति। तर्पयति इत्यादयोऽनेकेऽर्थाः-सन्ति। कृन्मेजन्त इत्यनेनाव्ययत्वम्।

हिन्दी भाषार्थ—ॐ यह प्रणव है प्रत्येक मन्त्र का सेतु है अर्थात् जैसे अथाह नदी को पुल से पार करने में कठिनता नहीं होती है इसी प्रकार ॐ इस प्रणव के सहित मन्त्र जपने से मन्त्रों की कठिनता शीघ्र दूर हो जाती है। ॐ ब्रह्म है ब्रह्म की महाशक्ति ही त्रिपदी गायत्री है एक एक पाद में विशेष रहस्य भरे हैं। तीन वेद, तीन देवता, तीन काल आदि का पूर्ण रहस्य त्रिपदा गायत्री में है। नाद-विन्दु और कला की त्रिपुटी भी तीनों पादों में स्थित हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय वाले अपने-अपने मतानुसार तीनों का सम्मेलन करके अत्यानन्द को प्राप्त होते हैं ॐ की उपासना ही परब्रह्म की उपासना है ॐ के विना मन्त्र में शक्ति ही नहीं आ सकती है। ॐ का अर्थ है जो संसार से पार करे। जो संसार को अपने मन में लीन करे। जो अनेक सुख प्रदान करे। जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि को नाश करे। जो उपासक को अपने मन से सम्वन्धित करे। जो आत्मदर्शन करावे। जो प्रकाश से अज्ञान नष्ट करे। जो प्राणियों को सन्मार्ग पर लगावे। जो संसार का चालक है जो सर्वज्ञ है। जो रक्षक है। जो प्रकाशक है। जो आनन्द स्वरूप है जो सर्वज्ञ है। जो निराकार है। जो समस्त चराचर का आधार है। इत्यादि ॐ के अनेक अर्थ हैं।

ओम्—यह अव्यय वाचक पद है, तीनों काल में तीनों लिङ्गों में सभी विभक्तियों में सदा एक सा रहने वाला है इसमें किसी प्रकार का विकार नहीं हो सकता है। अतएव विकारी के साथ उसका प्रयोग नहीं होता है, केवल परमात्मा आदि में युक्त होता है।

ॐ इतिस्मरणादेव ब्रह्मज्ञानं परावरम्।
तदेकमोक्षसिद्धिञ्च तमेवामृतमश्नुते॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—ॐ के स्मरण मात्र ही से ब्रह्मज्ञान की पराकाष्ठा, मोक्षता-अमरता की सिद्धि को प्राप्त कर लेता है वेदों में ॐ का महत्व भी सुचारु रीति से वर्णन है। ॐ स्मर (यजुर्वेद अ० १५)

अर्थ—ॐ का स्मरण करो।

अ+उ+म्=इनसे "ओम्" यह बना है। ॐ से व्याहृतियां प्रकट हुईं और व्याहृतियों से वेद प्रकट हुये वृहद् हारीति स्मृति में लिखा है कि—सर्वेषामेव मन्त्राणाङ् कारणम्प्रणवः स्मृतः। तस्माद् व्याहृतयोजातास्ताभ्यो वेदत्रयन्तथा ॥ इति ॥ भूः से ऋग्वेद। भुवः से यजुर्वेद। स्वः से सामवेद प्रकट हुआ ॥ "ॐ" के बिना जप पूजन दान आदि कर्म निष्फल हो जाते हैं। ॐ के प्रभाव से विष्णु-विष्णुत्व को। ब्रह्मा ब्रह्मत्व को तथा शिव शिवत्व को प्राप्त हुये हैं। यथा—ॐ इत्येकाक्षरध्यानाद् विष्णुर्विष्णुत्व माप्तवान्। ब्रह्मा ब्रह्मत्वमापन्नः शिवतामभवच्छिवः। इति। ॐ शब्द के बहुत अर्थ हैं यह सब शास्त्रों में विवेचन किया गया है। 'ॐ'यह सभी मन्त्रों का सेतु अर्थात् पुल है—जैसे लोग पुल से शीघ्र पार हो जाते हैं वैसे ॐ की सहायता से साधक शीघ्र मन्त्र के फल को प्राप्त कर लेता है। ॐकार की व्याख्या सुन्दर की गई है अर्थ भी अच्छा किया गया है शास्त्रों में।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गायत्री महामंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो देवस्यधीमहि धियो योनःप्रचोदयात्

ॐ=ब्रह्म
भूः=प्राणास्वरूप
भुवः=दुःखनाशक
स्वः=सुखस्वरूप
तत्=उस
सवितुः=प्रकाशक
वरेण्यम्=श्रेष्ठ
भर्गः=दुःखनाशक
देवस्य=दिव्यतेजका
धीमहि=ध्यानकरते हैं
धियः=बुद्धि को
यः=जो
नः=हमारी
प्रचोदयात्=प्रेरितकरे

सङ्केत—समस्त भ्रमों को दूर करके ऊपर लिखा ही गायत्री महामन्त्र जपना चाहिए ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गायत्री व्याख्या

१–तत्–शब्देन प्रत्यग्भूतं स्वतः सिद्धम्परब्रह्मोच्यते । 'शङ्करभाष्यम्' ।। तदिति अव्ययपदं परोक्षार्थे, इतिसन्ध्या-भाष्यम् ।

२–सविता–षूङ्, प्राणिप्रसवे धातोरिदं रूपम्, सुनोति, सूयते व चराचरञ्जगत् । सूर्यमण्डलान्तर्गतपुरुषः ईश्वरस्त-स्यसवितुरिति (भरद्वाजभाष्यम्) ।

३–वृञ् धातोः प्रार्थनायाम्–एकण्यप्रत्यये कृतेवरेण्य-मिति । अतिश्रेष्ठमित्यर्थः । वरेण्यम्–आश्रयणीयम् ।। वरेण्यम्–अभेदगम्यम् । सर्ववरणीयम् निरतिशयानन्दरूपम् । इत्यनेक आचार्याः ।

४–भर्गः–भेतिभासयतेलोकान् रेतिरञ्जयतेप्रजा ।। गइत्यागच्छतेऽजस्रम्भरगाद्भर्ग उच्यते ।। भ्रस्ज-पाके-इति-धातोः-असुन भर्ग इतिरूपम् (गृह्यपरिशिष्टे)

भर्जन्ति पापानिसंसारजन्ममरणादिदुःखमूलानियेन असौमर्गः (शं० भा०) भञ्जो-आमर्दने । भृजीभर्जने । भ्राजृदीप्तौ । इतिधातूनांरूपम् (भारद्वाजः) ।

५–देवस्य-क्रीडा विजिगीषा व्यवहार द्युति-स्तुतिइत्या-द्यर्थकदिवुधातोः पचाद्यच्-इत्यनेनाच् प्रत्यये-रूपम् । दीव्यति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशते चराचरञ्जगत्सदेवः प्रकाशः सर्वद्योतनात्मकाखण्ड-चिदेकरसम् (शं० भाष्यम्) दीव्यतिप्रकाशयति । क्रीडति-नन्दयति । इत्यनेकआचार्याः । तस्यदेवस्य

६–धीमहि–धीङ् आधारे– ध्यैचिन्तायाम्–वा–लिङ् ल-कारे "बहुलंछन्दसि" सूत्रेण सिद्धम् । वयन्ध्यायेम-ध्येयतया मनसाधारयेम वा वयम्

७–धीशब्दोवुद्धिवचनः, कर्मवचनो वाग्वचनश्च । (सायणभाष्यम्) धियोधरणवत्योवुद्धयः । विष्णुभाष्यम्) ।

८–यः–अत्र लिङ्गव्यत्ययः यद्भर्गः । यः भर्गोवा (सायण-महीधर भाष्यम्) यःशब्दश्च यदित्यर्थे लिङ्गव्यत्य-यतोभवेत (भारद्वाज-उव्वटभा०) यः-सविता (सायण-महीधरभाष्यम्) । यत्सत्यज्ञानादिलक्षणम् (विद्यारण्य-स्वामी) ।

९–नः–नः–अस्मदीयाः । नः–अस्माकम् । (सायण-भाष्यम्) ।

१०–प्रचोदयात्–प्रेरयेत् । धर्मार्थकाममोक्षेऽस्मदादीनां-वुद्धिं प्रेरयेत्–योजयेत् ।

इतिसङ्क्षेपतो व्याख्या ।

॥ गायत्र्यर्थ ॥

यत् सवितुर्देवस्य वरेण्यमस्माभिर्ध्येयम्-भर्गो जपता-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्पापभञ्जन हेतु भूनम् । धीमह्युपास्महे, तत्तेजोनोऽस्माकन्धियो, वुद्धीः श्रेयस्करेषु कर्मषु प्रचोदयात्, प्रेरयेदित्यर्थः ।

विशेष :–तत्तस्यसवितुर्जगदुत्पादयितुः सर्वान्तर्यामिणस्सूर्यस्य वरेण्यं वरणीयमतिश्रेष्ठमिति भावः । भर्गस्तेजः, देवस्य, द्योतनात्मकस्य दीप्यमानस्येत्यर्थः । धीमहि वयन्ध्यायाम :–चिन्तयामः, धियोधर्मादि विषयिणीर्वुद्धीः यस्सविता नः अस्माकम् प्रचोदयात् प्रेरयेत् । तत्रापिसरलार्थः–यस्सविता-प्रेरयिता । नः- अस्माकम् । धियः–धर्मादिविषयंबुद्धीः । प्रचोदयात् । तत्तस्यसवितुः–प्रेरयतुः सूर्याख्यस्य ब्रह्मणः । देवस्य–दीप्यमानस्य वरेण्यम्, वरणीयम् । भजनीयमिति ! भूरादिसप्तलोकप्रकाशकम् । आपस्वरूपञ्ज्योतिस्स्वरूपम्, रस आनन्दस्वरूपम्, अमृतंमोक्षरूपम्ब्रह्म भूभुर्वःस्वरूपम्, ओङ्कारस्वरूपञ्च भर्गस्तेजोधीमहि ध्यायामः गायान्-प्राणान् त्रायत इति"

॥ गायत्री का अर्थ हिन्दी भाषा में ॥

ओम्–ईश्वर का प्रधान नाम है । भूः–जो प्राणों का प्राण है । भुवः–जो सब दुःखों से मुक्त करने वाला है । स्वः–जो सुख स्वरूप है । जिस परब्रह्म के ध्यान करने से परमसुख प्राप्त होता है । सवितुः–सवस्थावर जङ्गम संसार को उत्पन्न करने वाला । देवस्य–जो सब सुख व कामनाओं को देने वाला है । वरेण्यम्-मानने योग्य । भर्गः–शुद्ध स्वरूप ! तत्–उस पर ब्रह्म परमात्मा को ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धीमहि–ध्यान करें। यः–जो सविता देव ईश्वर। नः-हमारी धियः–बुद्धि को। प्रचोदयात्-अच्छे कर्मों में प्रेरित करे।

॥ सरल अर्थ ॥

हम लोग उस पर ब्रह्म परमात्मा का ध्यान करते हैं जो प्राणों का भी प्राण है जो सब दुखों से मुक्त करने वाला है, जो सुख स्वरूप है, जिस ईश्वर के ध्यान से परम सुख प्राप्त होता है; जो चराचर ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाला है, जो मानने योग्य है, शुद्ध स्वरूप परब्रह्म परमात्मा है वह सविता देव ईश्वर हमारी बुद्धि को अच्छे कामों में प्रेरित करे (लगावे)—

सङ्केत—शाङ्कर भाष्य में गायत्री विवेचन सुचारु रीति से किया है उन्होंने यहाँ तक लिखा है कि गायत्री मन्त्र में चौबीस अक्षर हैं। प्रति अक्षर के क्रम से श्री वाल्मीकीयरामायण में चौबीस हजार श्लोक समाप्त किये हैं अर्थात्–तपःस्वाध्याय निरन्ततपस्वीवाग् विदांवरम्, यहाँ आरम्भ में ही (त) गायत्री के प्रथमाक्षर का प्रयोग किया है। सहस्त्रश्लोक के बाद पुनः दूसरे अक्षर (स) का प्रयोग किया है। इसी प्रकार श्री वाल्मीकीयरामाय की समाप्ति में अर्थात् चौबीस सहस्त्र समाप्ति में यात् (य) का प्रयोग किया है। पूरे चौबीस अक्षर समाप्त करके गायत्री का रहस्य वर्णन किया है। चौबीस अवतार भी महामन्त्र गायत्री के अनुसार ही माने हैं। विष्णु गायत्री भी चौबीस अक्षर की है।

महीधरभाष्य तया सायणभाष्य उव्वटभाष्य आचार्य रावण भाष्य आदि में भी गायत्री महामन्त्र के अर्थ पर अच्छा विवेचन किया है। तथा भरद्वाज, अगस्त्य, भट्टोजीदीक्षित, वरदराज आदि आचार्यों ने भी अच्छा विवेचन किया है। वृहदारण्यक उपनिषत् में अर्थ का विवेचन अच्छा किया है। सन्त महात्माओं ने अच्छे प्रकार से अर्थ किये हैं। ४० प्रकार के गायत्री महामन्त्र के अर्थ सुनने तथा प्रकाशित देखने में आये हैं– विशेषता अर्थ भेद की केवल बुद्धि वैभव समझ में आया है। केवल श्री गायत्रीमहामन्त्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के पदों को आगे पीछे करके तथा देवता भेद से अर्थ भेद किये हैं। सभी अर्थ मान्य हैं तथा सप्रमाण हैं किन्तु किसी एक अर्थ का ही चिन्तन करते हुये जपादि कर्म करना चाहिए। जिस ऋषि ने जिस अर्थ पर चिन्तन किया है वही अर्थ उस ऋषि का प्रधान रहा है।

गायत्री नाम का छन्द होने से गायत्री नाम है। शाक्तलोग श्री गायत्री की शक्ति रूप से उपासना करते हैं। शैव लोग इसकी उपासना शिवरूप से करते हैं। वैष्णव लोग विष्णुरूप से उपासना करते हैं। त्यागी सन्यासी आदि गायत्री का ध्यान निरवच्छिन्न सर्वस्वरूपात्मक ब्रह्म मानकर हृदयाकाश में करते हैं। इसी प्रकार अपने २ स्वाभीष्ट देवानुसार अर्थ मानकर सभी लोग ध्यानादि करते हैं, अतएव अर्थ में भी भेद होना स्वाभाविक है।

ब्रह्मचारी नोचे क्रम से तीन प्रणव लगाकर जपें। ओम् भूर्भुवः स्वः ओन्तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य-धीमहिधियोयो नः प्रचोदयात्-ओम्। इत्याकारः।

गृहस्थाश्रम वाले दो प्रणव लगातार जपें। ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्यधोमहिधियोयोनःप्रचोदयात् ॐ इत्याकारः।

त्यागियों के लिये एक प्रणव का क्रम है। ॐ भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्। इत्याकारः।

अजपागायत्रीस्वरूप

ॐ "सोहमस्मि" इयमेवहिपरमहंसमहात्मभिस्सदा ध्यायते मोक्षाखण्डपदार्थोलभ्यते निर्वाणधारातरङ्गोऽप्यस्यामेवगायत्र्याम्—इति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पञ्चप्रणवयुक्तगायत्री

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि ॐ धियोयोनः प्रचोदयात् ॐ ।

इस प्रकार जपने से अनन्त फल प्राप्त होता है। तीनपाद क्रमशः पृथक करके जपना चाहिये। यथाप्रथम-पाद — वरेण्यम्पर्यन्त। द्वितीयपाद — धीमहि पर्यन्त। तृतीयपाद–प्रचोदयात्पर्यन्त। इस प्रकार पृथक जपने से भी अनन्त फल प्राप्त होगा।

व्याहृतिगायत्री—भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम्। १२ अक्षर की है।

त्रिपदागायत्री–यही गायत्री मन्त्र है। तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्। यहां वरेणियम्–ऐसी योजना से २४ अक्षर होते हैं। यही प्रधान ब्रह्मगायत्री है। यहां तीन पाद हैं--चतुर्थपाद (परोरजसेसावदोम) ऐसा है। बहुत से आचार्य पिङ्गल आदि ग्रन्थानुसार चौबीस अक्षरों में ही ६-६ अक्षर का एक-एक चरण मानकर--छन्द गणना शुद्ध मानते हैं। यदि कहीं छन्द में अक्षर पूर्ति न होती हो तो वहाँ "तैद्वैदिकन्नितृच्छन्दोमृत्युञ्जयतुर्यथा" इति प्रमाण से नितृच्नामका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छन्द जानना चाहिये। पिङ्गल सूत्र "इयादि पूरणः" इस प्रमाण से 'वरेण्यम्' यहां पर 'वरेणियम्' ऐसा होने से चौबीस अक्षर वाली गायत्री सिद्ध होती है—अर्थात् जहां अक्षर पूर्ति न होती हो वहां 'इयादिपूरणः' इससे यकार को इय् सहित मानना चाहिये। इसी प्रकार जहां कहीं वकार हो वहां 'उव् सहित मानना चाहिये। अतएव 'वरेणियम्' यह वाक्य सिद्ध हो गया।

ॐतत्सवितुर्वरेणियम्भर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्—ऐसा मन्त्र जपना चाहिये अन्यथा ब्रह्मघाती होती है 'वरेणियम्' कहना चाहिये जप काल में। पाठकालेवरेण्यं-स्याज्जपकालेवरेणियम्। वरेण्यमितियोब्रूयात् सनरो ब्रह्म घातकः॥ इतिब्रह्मपुराणवाक्य से जपकाल में वरेणियम् होना चाहिये। यद्यपि श्री गायत्री महामन्त्र जपने में आचार्य्यों ने अनेक प्रकार के विधान बतलाये हैं—कहीं दो प्रणव लगाकर जप करे। कहीं प्रथम अनुलोम जप करे बाद में त्रिलोम करे। कहीं 'रम्' इस वीज को आदि तथा अन्त में लगा कर जप करे। इत्यादि अनेक विधि से जप करने के नियम बतलाये हैं वशिष्ठ संहिता आदि ग्रन्थों में ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्, इसी प्रकार जपने का विशेष महत्व है। तथापि जिसको जैसे मन्त्र पर अपने-अपने श्री गुरुदेव के कथनानु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सार विश्वास हो वही जप करे । वस्तुतः—ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनःप्रचोदयात्,, यही स्वरूप महामन्त्र का है इसी प्रकार जप करने से सकल कल्याण प्राप्त हो सकते हैं, इस प्रकार का मन्त्र जपा जाये इस पर अनेक आचार्यों की शास्त्रानुसार सम्मति है । अथवा जैसा आचार्य उपदेश करें वैसा जपे ।

॥ गायत्री पुरुष है या स्त्री ॥

"आगच्छवरदे देवित्र्यक्षरे ब्रह्मवदिनी" "गायत्री वेदजननी गायत्रो पापनाशिनी" "गायत्री वेद मातरम्" इत्यादि प्रमाणों से गायत्री स्त्री सिद्ध होती है ऐसी शङ्का नहीं करनी चाहिये "छान्दोग्योपनिषत्—में "गायत्री वाइदं सर्व भूतं यदिदं किञ्चवाग् वैगायत्री वाग्वा इदं सर्वभूतं गायति च त्रायते चेति" तथा च अथर्ववेद में "अथत्वं पुमानसि अथवा कुमारी अथवा कुमारः सर्वशक्तिमानिति" "तस्यभाषा सर्वमिदं विभातीति" इत्यादि अनेक प्रमाणों से गायत्री पुरुष निर्विवाद है । स्त्रीलिङ्गदर्शन तो लिङ्गानुशासनकोशादिवल से है । गायत्री नाम का छन्द है । दारशब्द स्त्री होते हुये तथा स्त्रीलक्षण भी होते हुये पुरुष न होने पर भी पुल्लिग बन जाता है। स्त्रीलक्षण चिह्न न होते हुये भी अचेतन खट्वा शब्द में स्त्रीत्व सिद्ध होता है अतएव लिंग दर्शन से गायत्री में स्त्रीत्व नहीं मानना चाहिए किन्तु ब्रह्मरूप होने से सभी लिंग मानने चाहिए । वस्तुतः निर्विवाद परब्रह्म है, स्त्री के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए । ॐअग्निर्देवता वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता इत्यादि वेदमन्त्र से स्पष्ट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है कि देवताओं में लिङ्ग प्रमाण नहीं मानना चाहिए। अन्यथा यहाँ कठिनता होगी सभी स्त्री लिङ्ग में हैं। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, विश्वेदेवा-वृहस्पति वरुण आदि।

शैव लोग गायत्री को शिव रूप से। वैष्णवलोगविष्णुरूप से। शाक्तजन शक्तिरूप से तथा अन्यान्य उपासक भी अपने-अपने स्वाभीष्टानुसार ध्यानादि करते है। सवितुः—इसका सूर्य ही अर्थ है यह नहीं मानना चाहिये। इसके अनेक अर्थ हैं। सविता—अर्थात् स्थावर जंगम को उत्पन्न करने वाला अथवा अन्तर्यामी आदि अनेक अर्थ विद्वान् शास्त्रानुसार करते हैं।

जहाँ एक या तीन या पाँच मुख वाली गायत्री में स्त्री रूप का वर्णन आता है वहाँ महाशक्ति का स्वरूप जानना चाहिए। उपासकों के विश्वास पर अनेक रूप धारण करने वाला ब्रह्म कभी पुरुष कभी स्त्री कुमार युवा आदि वन जाता है। यही पूर्ण निर्णय है। गायत्री छन्द वेद में अनेक प्रकार के हैं किन्तु गायत्री शब्द पङ्कज (कमल) शब्द की तरह योग रूढ़ होने से गायत्री महामन्त्र जो कि चौवीस अक्षरों वाला है उसी का ही बोधक है अन्य मन्त्रों का बोधक नहीं है।

तन्त्र शास्त्र में भी अनेक प्रकार की गायत्री हैं किन्तु वैदिक गायत्री एक ही है—अनेक प्रकार की नही है चूडा-गायत्री-आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वः। १४ अक्षर हैं। व्याहृतिगायत्री-ॐभूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।

इस सप्तप्रणव वाली गायत्री में १९ अक्षर हैं। शताक्षर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवम्-षष्ट्यक्षर आदिअनेक प्रकार की गायत्रीं हैं किन्तु इनमें भी आचार्य्यों के मत से भिन्न-भिन्न क्रम हैं।

गायत्री महामन्त्र का उद्धार-प्रणवम्पूर्वमुच्चार्य्यभूभुर्व-स्स्वस्ततःपरम् । गायत्रीम्प्रणवञ्चान्तेजपएष उदाहृतः ।

अर्थात्—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोदयात् ॐ । यह महामन्त्र है ।

वस्तुतः ४८ पृष्ठ का ही मन्त्र जपना चाहिये ।

अथगायत्रीगोत्रनिर्णयः ।

तै० आ० प्र० १० अ० २५—श्रीगायत्रीं गोत्र निर्णयः । अग्निर्मुखं ब्रह्मशिरो विष्णुर्हृदयं रुद्रश्शिखा पृथिवी योनिः प्राणापानव्यानोदानसमाना सप्राणा श्वेतवर्णा साङ्ख्यायनसगोत्रा ।

इति—विष्णोर्जनितेति श्रुतिः ।

साङ्ख्यायनो नाम कश्चन ऋषिः तेन समानङ्गोत्रं यस्यास्सा-साङ्ख्यायनसगोत्रा ।

अर्थ—गायत्री का साङ्ख्यान गोत्र है (दे० भा०) । अथवा साङ्कृत्य । (सि०)

॥ अथ षोडशाक्षरा गायत्री ॥

ॐ आपोज्योतीरसोमृतम् ॐ ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्,

॥ अथ षष्ट्यक्षरागायत्री ॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्व-रेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् ॐ अपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ अथ शताक्षरा गायत्री ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः (१६) (ही) (१) भूर्भुवःस्वः (४) तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् (२४) आपोज्योतिरसोऽमृतम्ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् (१६) परोरजसे सावदों (८) ॐ ॐ ॐ ॐ (४) ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् (१२) ॐ ऋग् ॐ यजुः ॐ साम ॐ अथर्व (१३) र (१) ठ (१) समष्टि=१००) इतिशताक्षरा गा० ।

वशिष्ठ संहित में ॐ जातवेदसे इत्यादि मन्त्र के ४३ अक्षर ।= यम्वकंयजामहे–इत्यादि मंत्र के ३३ अक्षर । त्रिपदा गायत्री के २४ अक्षर कुल १०० अक्षर होते हैं । शताक्षरा गायत्री में अनेक मत हैं । यही मत श्री देवी-भागवत में है ।

॥ गायत्री के तीन स्वरूप ॥

गायत्रीनामपूवाह्ने सावित्रीमध्यमे दिने ॥
सरस्वती च सायाह्ने सैवसन्ध्यात्रिपुरुस्मृता ॥१॥
गायत्री ब्रह्मरूपास्यात् सावित्रीरुद्ररूपिणी ॥
सरस्वती विष्णुरूपा उपास्यामूर्तिभेदतः ॥२॥

व्याख्या–गायतांत्राणेन गायत्री नाम । सवितृद्योतनात् सावित्रीतिनाम । जगताम्प्रसवनात् वाग्रूपत्वाच्चसरस्वतीतिनाम ।

हिन्दी भावार्थ–प्रातःकाल में गायत्री ब्रह्मरूपा । माध्यह्न में सावित्री रुद्ररूपा । सायङ्काल में सरस्वती विष्णुरूपा । की उपासना करना चाहिये । कुछ आचार्यों का मत यों है—

प्रातर्बालाचमध्याह्ने यौवनस्था भवेत्पुनः ।
वृद्धा सायम्भगवती चिन्त्यतेमुनिभिः सदा ॥१॥
हंसस्था गरुडारुडा तथावृषभवाहिनी ॥

अर्थ–प्रातःकाल में बाल्यावस्था में हंस पर स्थित रहती है । माध्याह्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में युवावस्था में में गरुड पर स्थित रहतीं हैं। सायंकाल में वृद्धा में वृषभ (बैल) पर सवार रहती हैं। यह मत विशेष मतों में सम्मिलित हैं।

इति श्रीगायत्रीतत्व निर्णयः ॥

शून्यरामनखे (२०३०) वर्षेभाद्रमासे दलेसिते ।
पौर्णमास्यान्दिनेसौम्य इटावामण्डलेशुभे ॥१॥
सलेमपुरके ग्रामे श्री शिवदत्तशास्त्रिणा ।
निवासङ्कुर्वताऽलेखिगायत्रीतत्वनिर्णयः ॥२॥

इटावामण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामनिवासिनासुधीशिरोमणिश्रीपं०श्यामलालशर्मसूनुनापं० शिवदत्तशर्मशास्त्रिणाश्रीगायत्रीतत्वनिर्णयःसमाप्तः ।

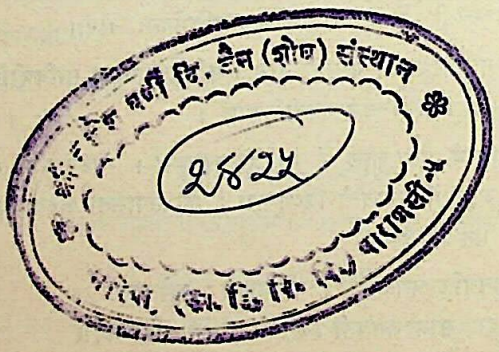

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमान् पूज्य पण्डित श्री शिवदत्त त्रिपाठी शास्त्री जी की रचित-अनुवादित व संशोधित पुस्तकों की सूची नीचे लिखी है।

१—श्रीदेवीस्तोत्रम्	भाषा	टीका	सहितम्	
२—श्रीगुरुस्तोत्रम्	,,	,,	,,	
३—श्रीरामस्तोत्रम्	,,	,,	,,	
४—श्रीशिवस्तोत्रम्	,,	,,	,,	
५—श्रीहनुमत्स्तोत्रम्	,,	,,	,,	
६—श्रीकामदस्तोत्रम्	,,	,,	,,	
७—मन्त्रतत्वविवेचनम्	,,	,,	,,	
८—मन्त्रतत्वविवेचनम्	,,	,,	,,	
९- सावरमन्त्रतत्वविवेचनम्	,,	,,	,,	
१०—वेदान्ततत्वविवेचनम्	,,	,,	,,	
११—जीवनतत्वविवेचनम्	,,	,,	,,	
१२—श्रीगायत्रीतत्वविवेचनम्	,,	,,	,,	
१३—श्रीवैयाकरणभूषणसारतत्वविवेचनम्	,,	,,	,,	
१४—श्रीशिवसूत्ररहस्यम्	,,	,,	,,	
१५—श्रीनायणीशकुनावली	,,	,,	संहिता	
१६—हरिवंशपुराणश्रवणविधिः				
१७—शक्तिपीठनिर्णयः।				
१८—तन्त्रदुर्गासप्तशती				
१९—श्रीगायत्रीतत्वनिर्णयः				

EP
ELORA PRINTERS
KANPUR

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi